आवश्यक निवेदन

प्रस्तुत अध्ययन सामग्री, तालिकाएँ एवं चित्र आदि श्रीमती सारिका विकास छाबड़ा द्वारा तैयार किये गए हैं |

इनका अन्यत्र एवं अन्य भाषा में उपयोग करने के पूर्व उनसे अनिवार्यतः संपर्क कर लें |

fppt.com

अधिकार 4 – प्राण प्ररूपणा

आचार्य नेमिचंद सिद्धांतचक्रवर्ती

fppt.com

बाहिरपाणेहिं जहा, तहेव अब्भंतरेहिं पाणेहिं।
पाणंति जेहिं जीवा, पाणा ते होंति णिद्दिट्ठा॥129॥

- अर्थ - जिस प्रकार अभ्यन्तर प्राणों के कार्यभूत नेत्रों का खोलना, वचनप्रवृत्ति, उच्छ्वास-निःश्वास आदि बाह्य प्राणों के द्वारा जीव जीते हैं, उसी प्रकार जिन अभ्यन्तर इन्द्रियावरण कर्म के क्षयोपशमादि के द्वारा जीव में जीवितपने का व्यवहार हो, उनको प्राण कहते हैं ॥129॥

fppt.com

प्राण

जिनसे जीव 'प्राणन्ति' अर्थात् जीवन-व्यवहार के योग्य होते हैं, आत्मा के वे धर्म प्राण कहे जाते हैं |

जिनके संयोग से जीवन और वियोग से मरण का व्यवहार होता है, वे धर्म प्राण कहे जाते हैं|

fppt.com

प्राण

द्रव्य प्राण

पौद्गलिक द्रव्य-इन्द्रिय आदि के व्यापार-रूप

भाव प्राण

द्रव्य प्राण में निमित्तभूत ज्ञानावरण तथा वीर्यान्तराय कर्मों के क्षयोपशम आदि से प्रकट हुए चेतन के व्यापार-रूप

fppt.com

पंच वि इंदियपाणा, मणवचिकायेसु तिण्णि बलपाणा।
आणपाणप्पाणा, आउगपाणेण होंति दस पाणा॥130॥

- अर्थ - पाँच इन्द्रिय प्राण - स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र;
- तीन बलप्राण - मनोबल, वचनबल, कायबल;
- एक श्वासोच्छ्वास तथा
- एक आयु
  - इसप्रकार ये दश प्राण हैं ॥130॥

fppt.com

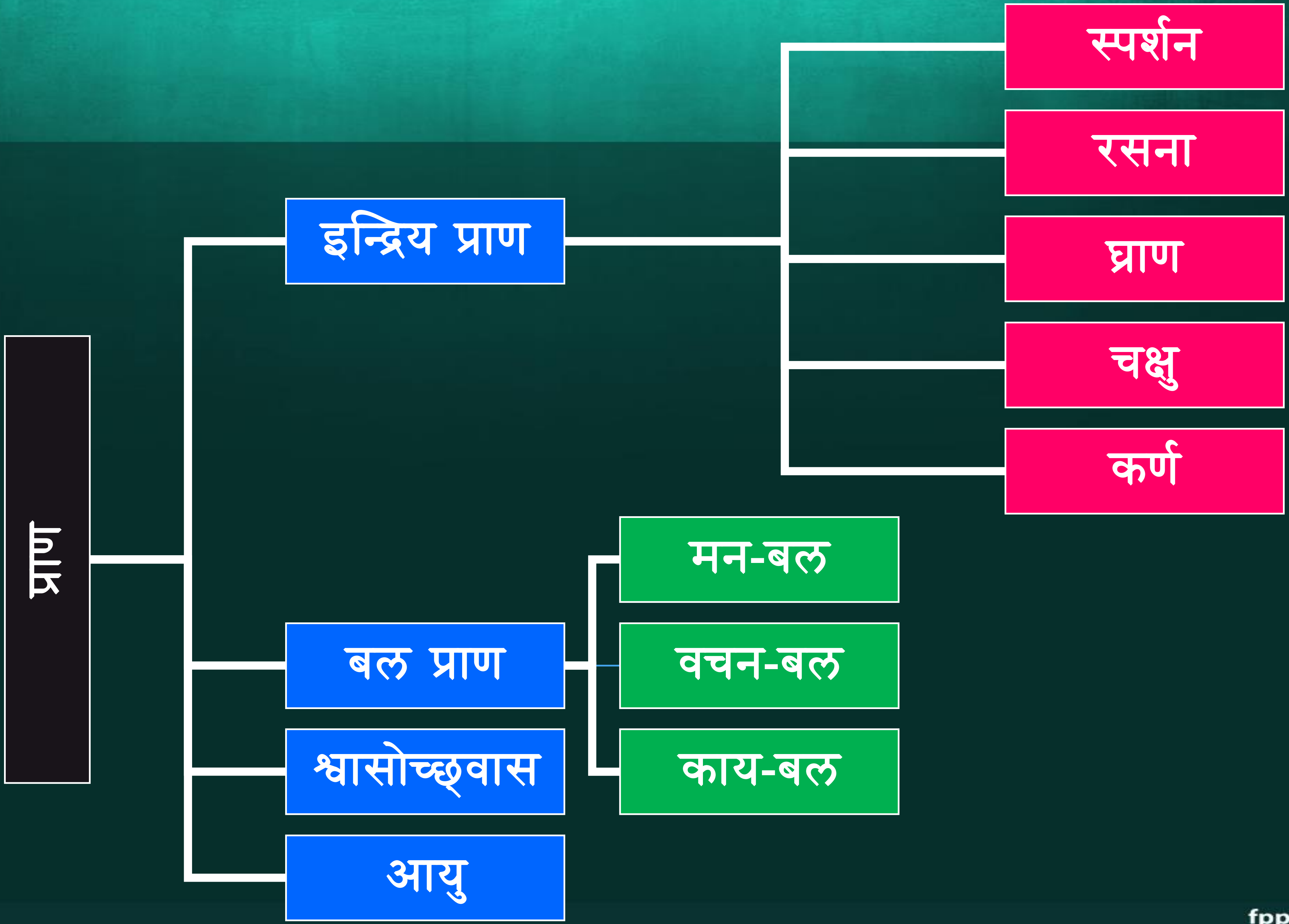
प्राण
इन्द्रिय प्राण
स्पर्शन
रसना
घ्राण
चक्षु
कर्ण
बल प्राण
मन-बल
वचन-बल
काय-बल
श्वासोच्छ्वास
आयु
fppt.com

वीरियजुदमदिखउवसमुत्था णोइंदियेंदियेसु बला।
देहुदये कायाणा, वचीबला आउ आउदये॥131॥

- अर्थ - मनोबल प्राण और इन्द्रिय प्राण वीर्यान्तराय कर्म और मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशमरूप अन्तरंग कारण से उत्पन्न होते हैं।
- शरीर नामकर्म के उदय से कायबलप्राण होता है।
- श्वासोच्छ्वास और शरीर नामकर्म के उदय से श्वासोच्छ्वास प्राण उत्पन्न होते हैं।
- स्वर नामकर्म के साथ शरीर नामकर्म का उदय होने पर वचनबल प्राण होता है।
- आयु कर्म के उदय से आयु प्राण होता है ॥131॥

fppt.com

प्राणों के स्वरूप

5 इन्द्रिय प्राण

- स्वार्थ को ग्रहण करने की शक्तिरूप लब्धि नामक भावेंद्रिय स्वभाव वाले
- स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र के क्षयोपशम से उत्पन्न हुए
- 5 इन्द्रिय प्राण कहलाते हैं |

कायबल प्राण

- शरीर नाम कर्म के उदय होने पर
- शरीर की चेष्टा को उत्पन्न करने की
- आत्मप्रदेश के समूह की शक्तिरूप
- कायबल प्राण होता है ।

fppt.com

वचनबल प्राण

- स्वर नामकर्म के उदय होने पर
- वचन व्यापार की शक्ति विशेषरूप
- वचन-बल प्राण होता है ।

मनोबल प्राण

- स्वार्थ को ग्रहण करने की शक्तिरूप लब्धि नामक भावेंद्रिय स्वभाव वाले
- नोइंद्रिय से उत्पन्न हुए
- अनुभूत अर्थ को ग्रहण करना तथा उसकी योग्यता मनोबल प्राण है ।

fppt.com

श्वासोच्छ्वास प्राण

- उच्छ्वास नामकर्म के उदय के साथ
- शरीरनाम कर्म का उदय होने पर
- उच्छ्वास-निश्वास की प्रवृत्ति का शक्तिरूप कारण श्वासोच्छ्वास प्राण होता है ।

आयु प्राण

- आयु कर्म का उदय होने पर
- नारकादि पर्यायरूप भव धारण की शक्तिरूप आयु प्राण होता है ।

fppt.com

प्राणों की उत्पत्ति की सामग्री

प्राण	उत्पत्ति का कारण
इन्द्रिय प्राण	वीर्यान्तराय और मतिज्ञानावरण का क्षयोपशम
मन बल	,,
काय बल	शरीर नाम कर्म
वचन बल	,, और स्वर नामकर्म
श्वासोच्छ्वास	,, और श्वासोच्छ्वास नामकर्म
आयु	आयु कर्म

pt.com

पर्याप्ति और प्राण में अन्तर

पर्याप्ति	प्राण
• कारण • कार्य	• कार्य • कारण
* पुद्गल को इन्द्रियादिरूप परिणमाने की शक्ति की पूर्णता	* वचन-व्यापारादि की कारणभूत योग्यता
	* वचनादिरूप प्रवृत्ति
6 पर्याप्तियों में आयु प्राण नहीं है ।	

ot.com

इन्द्रिय प्राण और इन्द्रिय पर्याप्ति में अंतर

इन्द्रिय प्राण	इन्द्रिय पर्याप्ति
इन्द्रिय प्राण कारण है।	इन्द्रिय पर्याप्ति कार्य है ।
5 इन्द्रिय सम्बन्धी आवरणों के क्षयोपशम से उत्पन्न हुए 5 इन्द्रिय प्राण होते हैं ।	विवक्षित पुद्गल स्कंधों को स्पर्शन आदि द्रव्येंद्रिय-रूप से परिणमाने की शक्ति की निष्पत्ति को इंद्रिय पर्याप्ति कहते हैं ।

fppt.com

मनोबल प्राण और मन पर्याप्ति में अंतर

मनबल प्राण कार्य है ।	मन पर्याप्ति कारण है ।
अनुभूत अर्थ को ग्रहण करना तथा उसकी योग्यता मनोबल प्राण है ।	मनोवर्गणा के रूप में आये हुए पुद्गलस्कंधों को द्रव्यमनोरूप से परिणमन कराने की शक्ति की पूर्णता को मन:पर्याप्ति कहते हैं ।

fppt.com

कायबल प्राण और शरीर पर्याप्ति में अंतर

कायबल प्राण कारण है ।	शरीर पर्याप्ति कार्य है ।
काय वर्गणा की सहायता से होने वाली आत्म-प्रदेश के समूह की शक्ति कायबल प्राण है ।	खल और रसभाग रूप से परिणत नोकर्म पुद्गलों को अस्थि आदि स्थिर और रुधिर आदि अस्थिर अवयवों के रूप से परिणमन करने की शक्ति की पूर्णता को शरीर पर्याप्ति कहते हैं ।

fppt.com

वचनबल प्राण और भाषा पर्याप्ति में अंतर

वचनबल प्राण कार्य है ।	भाषा पर्याप्ति कारण है ।
भाषापर्याप्ति के पूर्ण होने के पश्चात् वचन-व्यापार की शक्ति विशेषरूप कारण वचन बल प्राण होता है ।	स्वर नामकर्म के उदय से भाषा वर्गणा के रूप में आये हुए पुद्गल स्कंधों को भाषारूप परिणमाने की शक्ति की पूर्णता को भाषा पर्याप्ति कहते हैं ।

fppt.com

श्वासोच्छ्वास प्राण और श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति में अंतर

श्वासोच्छ्वास प्राण	श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति
श्वासोच्छ्वास प्राण कार्य है ।	श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति कारण है ।
श्वासोच्छ्वास का परिणमन श्वासोच्छ्वास प्राण है ।	श्वासोच्छ्वास के निकलने की शक्ति की पूर्णता को श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति कहते हैं ।

fppt.com

इंदियकायाऊणि य, पुण्णापुण्णेसु पुण्णगे आणा।
बीइंदियादिपुण्णे, वचीमणो सण्णिपुण्णेव॥132॥

- अर्थ - इन्द्रिय, काय, आयु – ये तीन प्राण, पर्याप्त और अपर्याप्त दोनों ही के होते हैं। किन्तु श्वासोच्छ्वास पर्याप्त के ही होता है।
- और वचनबल प्राण पर्याप्त द्वीन्द्रियादि के ही होता है तथा
- मनोबल प्राण संज्ञीपर्याप्त के ही होता है ॥132॥

fppt.com

प्राण सम्बंधित नियम

नियम 1

- 3 प्राण - इन्द्रिय, काय, आयु – ये सभी (पर्याप्त और अपर्याप्त) के होते हैं।

नियम 2

- श्वासोच्छ्वास, वचन-बल और मनोबल पर्याप्तक के ही पाए जाते हैं।

नियम 3

- उसमें भी श्वासोच्छ्वास सभी पर्याप्तक के, वचन-बल द्वीन्द्रिय पर्याप्तक के और मनोबल पंचेन्द्रिय संज्ञी पर्याप्तक के ही पाए जाते हैं।

fppt.com

प्राणों के स्वामी

प्राण	स्वामी
इन्द्रिय प्राण	पर्याप्त, अपर्याप्त
मन-बल	पर्याप्त सैनी
काय-बल	पर्याप्त, अपर्याप्त
वचन-बल	पर्याप्त द्वीन्द्रियादि
श्वासोच्छ्वास	पर्याप्त
आयु	पर्याप्त, अपर्याप्त

fppt.com

दस सण्णीणं पाणा, सेसेगूणंतिमस्स वेऊणा।
पज्जत्तेसिदरेसु य, सत्त दुगे सेसगेगूणा॥133॥

- अर्थ - पर्याप्त संज्ञी पंचेन्द्रिय के दश प्राण होते हैं।
- शेष पर्याप्तकों के एक-एक प्राण कम होता जाता है, किन्तु एकेन्द्रियों के दो कम होते हैं।
- अपर्याप्तक संज्ञी और असंज्ञी पंचेन्द्रिय के सात प्राण होते हैं और शेष अपर्याप्त जीवों के एक-एक प्राण कम होता जाता है ॥133॥

fppt.com

किस जीव के कितने और कौन-कौन-से प्राण होते हैं?

जीव	अपर्याप्त		पर्याप्त	
	कितने	कौन-से	कितने	कौन-से
एकेन्द्रिय	3	स्पर्शन इन्द्रिय, काय बल, आयु	4	स्पर्शन इन्द्रिय, काय बल, आयु, श्वासो.
द्वीन्द्रिय	4	,, + रसना	6	,, + रसना, वचन बल
त्रीन्द्रिय	5	,, + घ्राण	7	,, + घ्राण
चतुरिन्द्रिय	6	,, + चक्षु	8	,, + चक्षु
पंचेन्द्रिय असैनी	7	,, + कर्ण	9	,, + कर्ण
पंचेन्द्रिय सैनी	7	,,	10	,, + मन बल

किस जीव के कितने और कौन-कौन-से प्राण होते हैं?

जीव	पर्याप्त	
	कितने	कौन से
सयोगकेवली	4	वचन-बल, काय-बल, आयु, श्वासोच्छ्वास
	3	काय-बल, आयु, श्वासोच्छ्वास
	2	काय-बल, आयु
अयोगकेवली	1	आयु

प्राणातीत

दशों प्राणों के अभाव को अतीत-प्राण या प्राणातीत कहते हैं ।

वे सिद्ध भगवान् प्राणातीत हैं, परन्तु निश्चय चैतन्य प्राणों से सदैव जीवित हैं ।

fppt.com

- Reference : गोम्मटसार जीवकाण्ड, सम्यग्ज्ञान चंद्रिका, गोम्मटसार जीवकांड - रेखाचित्र एवं तालिकाओं में

Presentation developed by
Smt. Sarika Vikas Chhabra

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 0731-2410880 , 94066-82889

fppt.com